AIRO JOURNALS
Peer Reviewed Multidisciplinary International
ISSN:2320-3714
Volume: 1 Issue: 2
February 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Education

मृदुला सिन्हा का जीवन परिचय एवं व्यक्तित्व तथा कृतित्व का एक अध्ययन

मोहिनी गुप्ता,
डॉ. राजेश कुमार शर्मा,
डॉ. शिवानी शर्मा
हिंदी विभाग, भगवंत यूनिवर्सिटी, अजमेर

DECLARATION: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER /ARTICLE, HERE BY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTEDBY ME FOR PUBLICATION IN THE JOURNALIS COMPLETELY MY OWN GENUINE PAPER. IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ OTHER REAL AUTHOR ARISES, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THEJOURNAL WEBSITE. FOR THE REASON OF CONTENT AMENDMENT/ORANY TECHNICAL ISSUE WITH NOVISIBILITY ON WEBSITE/UPDATES, I HAVE RESUBMITTED THIS PAPER FOR THE PUBLICATION.FOR ANY PUBLICATION MATTERS OR ANY INFORMATION INTENTIONALLY HIDDEN BY ME OR OTHERWISE, ISHALL BE LEGALLY RESPONSIBLE. (COMPLETE DECLARATION OF THE AUTHOR ATTHE LAST PAGE OF THISPAPER/ARTICLE

सारांश

मृदुला सिन्हा हिंदी साहित्य के आधुनिक धारा कीएक सहज सजग साहित्यकार है। इन्होंने अपने साहित्य में सामाजिक कुरीतियां, विसंगतियां, आधुनिकता बोध, यथार्थ बोध, मानवीय मूल्यों का विघटन मशीनी युग में उत्पन्न घुटन, कुंठा, अकेलापन तथा निराशा जैसी विकृतियों को चित्रित किया है। शोध का मुख्य उद्देश्य मृदुला सिन्हा के जीवन परिचय एवं व्यक्तित्व तथा कृतित्व का अध्ययन करना है और मृदुला सिन्हा के सामाजिक जीवन से जुड़े हुए कार्य को बताना है।

मुख्य शब्द: यथार्थ बोध, मानवीय मूल्यों का विघटन, परिचय एवं व्यक्तित्व तथा कृतित्व

परिचय

मृदुला सिन्हा (27 नवंबर 1942 – 18 नवंबर 2020) एक भारतीय लेखिका और राजनीतिज्ञ थीं, जिन्होंने अगस्त 2014 से अक्टूबर 2019 तक गोवा की राज्यपाल के रूप में कार्य किया। वह गोवा की पहली महिला राज्यपाल थीं। मृदुला सिन्हा हिंदी साहित्य के आधुनिक धारा कीएक सहज सजग साहित्यकार है। इन्होंने अपने साहित्य में सामाजिक कुरीतियां, विसंगतियां,

ISSN:2320-3714
Volume: 1 Issue: 2
February 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Education

आधुनिकता बोध, यथार्थ बोध ,मानवीय मूल्यों का विघटन मशीनी युग में उत्पन्न घुटन, कुंठा, अकेलापन तथा निराशा जैसी विकृतियों को चित्रित किया है।

युगबोध के संदर्भ में स्थितियों का आकलन करते हुए यथार्थ को चित्रित किया है। अपनी धारणाओं के माध्यम से उन्होंने यथार्थवादी दृष्टिकोण का विकास किया है। शोध का मुख्य उद्देश्य मृदुला सिन्हा के उपन्यासों में यथार्थ बोध के विभिन्न आयामों को प्रस्तुत करना, सामाजिक आर्थिक, धार्मिक,सांस्कृतिक आदि क्षेत्रों में चेतना की दिशा और दशा देखना।

मृदुला सिन्हा ने सामाजिक जीवन से जुड़े हुए नैतिक मूल्य में नवीनता लाने का प्रयास किया है।

मृदुला सिन्हा एक राजनीतिक जगत के साथ–साथ साहित्य रचना जगत में भी विशेष स्थान रखती हैं। इन्होंने अपने साहित्य में संपूर्ण समाज की झलक स्पष्ट की है। उनके साहित्य का मुख्य विषय मानव जीवन के विभिन्न पहलू है। उन्होंने समाज में समता लाने का प्रयास किया है। समाज की बुराइयों का खंडन किया है।

मृदुला सिन्हा के रचना साहित्य में सांस्कृतिक परिवेश धार्मिक आयाम मानव जीवन की विसंगतियों एवं समस्याओं का चित्रण किया गया है। मृदुला सिन्हा के उपन्यासों में नारी मन की भावनाओं का यथार्थ चित्रण किया गया है। मृदुला सिन्हा का साहित्य संसार इस युग के अधिकांश सत्य की मानसिकता को सामाजिकता के इर्द–गिर्द चक्कर लगाता है। इस प्रकार समाज के हर पक्ष के संदर्भों को साहित्य जगत में लाने का एक अथक प्रयास किया गया है।

मृदुला सिन्हा बीजेपी महिला मोर्चा की पूर्व अध्यक्ष भी रह चुकी हैं. उन्हें 2021 में मरणोपरांत भारत के चौथे सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

प्रारंभिक जीवन

मृदुला सिन्हा का जन्म 27 नवंबर 1942 को भारत में बिहार राज्य के मिथिला क्षेत्र के मुजफ्फरपुर जिले के छपरा धरमपुर यदु गांव में एक भूमिहार ब्राह्मण परिवार में हुआ था। ख्उद्धरण वांछित, उनके पिता बाबू छबीले सिंह थे और उनकी मां अनुपा देवी थीं। उन्होंने छपरा के स्थानीय स्कूल

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed Multidisciplinary International
ISSN:2320-3714
Volume: 1 Issue: 2
February 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Education

में पढ़ाई की और बाद में लखीसराय जिले में लड़कियों के लिए आवासीय विद्यालय बालिका विद्यापीठ में पढ़ाई की।

अपनी स्नातक की डिग्री पूरी करने से कुछ समय पहले, मृदुला के माता–पिता ने उनकी शादी राम कृपाल सिन्हा से तय कर दी, जो उस समय बिहार के मुजफ्फरपुर शहर में एक कॉलेज लेक्चरर थे। शादी के बाद मृदुला ने अपनी पढ़ाई जारी रखी और मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर की डिग्री ली। इसके बाद उन्होंने मोतिहारी के डॉ एस के सिन्हा महिला कॉलेज में लेक्चरर की नौकरी कर ली।। कुछ ही समय बाद, उनके पति को डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त हुई। उन्होंने नौकरी छोड़ दी और मुजफ्फरपुर में एक स्कूल शुरू किया जहां उनके पति एक कॉलेज में कार्यरत थे।

आजीविका

इस बीच, अपने पति के प्रोत्साहन से, मृदुला ने लघु कहानी प्रारूप के साथ प्रयोग किया।ख्9, वह सांस्कृतिक मामलों और गाँव की परंपराओं में रुचि रखती थीं। उन्होंने इन विषयों पर और लोक कथाओं पर लघु कहानियाँ लिखीं, जिन्हें उन्होंने उन गाँवों से इकट्ठा किया था जहाँ वह और उनके पति काम करते थे। इनमें से कई कहानियाँ हिंदी भाषा की पत्रिकाओं में प्रकाशित हुईं और बाद में बिहार की लोक–कथाएँ (''बिहार की लोक–कथाएँ'') नामक दो खंडों के संकलन में संकलित की गईं। उन्होंने कई उपन्यास और राजमाता विजयाराजे सिंधिया की जीवनी 'एक थी रानी ऐसी भी' भी लिखी। इस किताब पर बाद में इसी नाम से एक फिल्म भी बनाई गई।

मृदुला ने शुरुआत में जिला समिति के चुनाव के लिए अपने अभियान के दौरान निर्वाचन क्षेत्र की महिलाओं तक पहुंचने में अपने पति की मदद की। उन्होंने पाया कि स्थानीय परंपरा और सांस्कृतिक बारीकियों के अपने ज्ञान के कारण, उनका लोगों, विशेषकर महिलाओं के साथ एक मजबूत जुड़ाव था। उन्होंने सामाजिक कल्याण के प्रति बहुत गहरी रुचि और प्रतिबद्धता विकसित की, हालाँकि उन्हें चुनावी राजनीति में कोई दिलचस्पी नहीं थी और उन्होंने कभी कोई चुनाव नहीं लड़ा। उन्हें केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड का अध्यक्ष नामित किया गया।

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed Multidisciplinary International
ISSN:2320-3714
Volume: 1 Issue: 2
February 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Education

राजनीतिक कैरियर

इस समय उनके पति बिहार राज्य सरकार में कैबिनेट मंत्री थे। वह अगस्त 2014 तक भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सदस्य थीं। 2014 के आम चुनावों के लिए भाजपा के अभियान के दौरान, वह भाजपा महिला मोर्चा (महिला विंग) की प्रभारी थीं। 25 अगस्त 2014 को उन्हें गोवा का राज्यपाल नियुक्त किया गया

सिन्हा को भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा स्वच्छ भारत अभियान के लिए एक राजदूत भी नियुक्त किया गया था। गोवा के राज्यपाल के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने दैनिक पूजा के उद्देश्य से राजभवन में एक गाय और एक बछड़े को भी गोद लिया था।

निष्कर्ष

निष्कर्ष यह है कि मृदुला सिन्हा का रचना साहित्य हिंदी साहित्य जगत की अक्षय अमूल्य निधि है। प्रतिभा की धनी लेखिका मृदुला सिन्हा ने विभिन्न विषयों पर विचारों को व्यक्त किया है। उनकी रचना का असर मंथर गति से होता है लेकिन समाज के संस्कार बदलने का सामर्थ्य साहित्य में होता है ,भले ही उसमें सालों साल लग जाए।

साहित्य में युग बोध का महत्वपूर्ण स्थान होता है साहित्य में जो भी चेतना की उपज होती हैं उसमें युगबोध संश्लिष्ट होता है। चेतना अनुभूतियों की जननी होती है। साहित्य की आत्मा साहित्य चेतना के बिना प्राणरहित तथा युगबोध के बिना अंधा होता है।

सामाजिक आयाम, आर्थिक आयाम ,सांस्कृतिक आयाम ,धार्मिक राजनीतिक एवं मनोवैज्ञानिक सभी पक्षों पर युगबोध का महत्व है। सिन्हा के उपन्यासों में जीवन की समस्याओं को प्रमुखता से उजागर किया गया है। मृदुला सिन्हा ने अपने उपन्यास में इन समस्याओं के प्रति समाज का ध्यान आकर्षित किया है तथा इन समस्याओं को दूर करने के लिए समाज से पहल की है।

संदर्भ सूची

- रामधारी सिंह दिनकर,संस्कृति के चार अध्याय ,राजकमल एंड संस दिल्ली प्रकाशन 1956
- धीरेंद्र वर्मा,हिंदी साहित्य कोश, ज्ञानमंडल लिमिटेड बनारस 1993

AIRO JOURNALS
Peer Reviewed Multidisciplinary International
ISSN:2320-3714
Volume: 1 Issue: 2
February 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Education

- हिंदी साहित्य का संदर्भ प्रसंग 301
- मृदुला सिन्हा, अतिशय प्रतिष्ठा प्रतिभा प्रतिष्ठान,नेताजी सुभाष मार्ग नई दिल्ली 2003
- मृदुला सिन्हा,मात्र देहर नहीं है औरत ,सामयिक प्रकाशन नेताजी सुभाष दरियागंज नई दिल्ली 2009
- मृदुला सिन्हा,सीता पुणे बोली, दरियागंज नई दिल्ली 2007
- मृदुला सिन्हा,बिहार की लोक कथाएं, प्रकाशन सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली 1982
- बिंदु अग्रवाल, हिंदी उपन्यासों में नारी चित्रण ,राधाकृष्ण प्रकाशन दरियागंज नई दिल्ली 1950
- कृष्णाराणा ,हिंदी साहित्य विविध संदर्भ, विभूति प्रकाशन दिल्ली 1966
- मंगल देव,शास्त्री भारतीय संस्कृति का विकास,भारतीय विद्या प्रकाशन वाराणसी 1964

Author’s Declaration

I as an author of the above research paper/article, hereby, declare that the content of this paper is prepared by me and if any person having copyright issue or patent or anything otherwise related to the content, I shall always be legally responsible for any issue. For the reason of invisibility of my research paper on the website/amendments/updates, I have resubmitted my paper for publication on the same date. If any data or information given by me is not correct, I shall always be legally responsible. With my whole responsibility legally and formally have intimated the publisher (Publisher) that my paper has been checked by my guide (if any) or expert to make it sure that paper is technically right and there is no unaccepted plagiarism and hentriacontane is genuinely mine. If any issue arises related to Plagiarism/ Guide Name/ Educational Qualification / Designation/ Address of my university/ college /institution/ Structure or Formatting/ Resubmission/Submission/Copyright/Patent/Submission for any higher degree or Job/Primary Data/Secondary Data Issues. I will be solely/entirely responsible for any legal issues. I have been informed that the most of the data from the website is invisible or shuffled or vanished from the database due to some technical fault or

ISSN:2320-3714
Volume: 1 Issue: 2
February 2024
Impact Factor: 11.9
Subject: Education

hacking and therefore the process of resubmission is there for the scholars/students who finds trouble in getting their paper on the website. At the time of resubmission of my paper I take all the legal and formal responsibilities, If I hide or do not submit the copy of my original documents(Aadhar/Driving License/Any Identity Proof and Photo) in spite of demand from the publisher then my paper may be rejected or removed from the website anytime and may not be consider for verification. I accept the fact that As the content of this paper and the resubmission legal responsibilities and reasons are only mine then the Publisher (Airo International Journal/Airo National Research Journal) is never responsible. I also declare that if publisher finds Any complication or error or anything hidden or implemented otherwise, my paper maybe removed from the website or the watermark of remark/actuality maybe mentioned on my paper. Even if anything is found illegal publisher may also take legal action against me

मोहिनी गुप्ता,
डॉ. राजेश कुमार शर्मा,
डॉ. शिवानी शर्मा

******